SAFINA KAUSAR
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HOME SCIENCE

AL-HAFEEZ COLLEGE V.K.S.U. ARA.

B.A (U.G)
PAPER: 7th VII

प्रसार शिक्षा

TOPIC: 4: दृश्य, श्रव्य, शिक्षण सहायक सामग्री
(Audio Video Aids.)

Scanned with CamScanner

*) **प्रसार शिक्षण सहायक संस्था** → प्रसार शिक्षा के प्रचार-प्रसार अथवा उनके कार्यक्रम के निष्पादन के लिए प्रसार कार्यकर्ता द्वारा विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे — पत्र लेखन, व्यक्तिगत भेंट, दूरभाष, प्रशमिय वार्ता आदि जैसी व्यक्तिगत संपर्क या पहुँच विधि प्रदर्शन, परिधान प्रदर्शन समोष्ठी सम्मेलन, सेमिनार तथा शैक्षिक यात्रा आदि जैसी दल सम्पर्क या पहुँच विधि एवं जन सभा, समाचारपत्र, मैगजिन एवं जेनरल आदि जैसी जन समूह संपर्क या पहुँच विधि विभिन्न विधियों का उपयोग सरलता पूर्वक एवं सफलता पूर्वक करने के लिए विभिन्न उपकरणों या साधनों या सामग्रियों की सहायता प्रसार कार्यकर्ता लेते है। इनकी सहायता लेना प्रायः उनके लिए आवश्यक होता है। इन्हीं उपकरणों या साधनो या सामग्रियों को परस्पर शिक्षा, शिक्षण, सहायक या प्रसार शिक्षण सहायक उपकरण या साधन या सामग्री कहाँ जाता है।

प्रसार शिक्षा के विभिन्न विद्वानो द्वारा प्रसार शिक्षण सहायक सामग्री को विभिन्न प्रकार से प्रभावित किया जाता है।

1) **डाशामा** → ये उपकरण बोले गए शब्दों को अधिक स्पष्ट करने में सहायता देते है क्योंकि इनके माध्यम से विचारो को ज्ञानेंद्रिया में से एक से अधिक की सहायता से प्रस्तुत किया जाता है।

2) **सुपे** → इनके अनुसार जो प्रसार कार्य के शिक्षण में सफलता प्रदान करने के लिए उपयोग में लिए जा सकते है।

*) **शिक्षण सहायक उपकरणों का वर्गीकरण** → प्रसार शिक्षण सहायक अथवा प्रसार शिक्षा सहायक उपकरणों या सामग्रियों या साधनों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया जाता है

1) **पढ़े जाने वाले समान** → इन्हे लिखित या मुद्रित सामग्री भी कहा जा सकता है। इन्हें दृश्य सामग्री में भी रखा जा सकता है। ऐसे साधनों या सामग्री जिनसे पढ़ने, पढ़ाने के माध्यमों में शिक्षा प्रदान कि जाती है। पढ़े जाने वाले समान या सहायक सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे —

[illegible] साप्ताहिक, मासिक, त्रिमासिक [illegible] पत्र पत्रिकाएँ।

Scanned with CamScanner

2) दृश्य उपकरण या साधन → ऐसे उपकरणों या साधनों जिनसे देखने या दिखाने के माध्यम से शिक्षा-प्रसार की जा सकती है को दृश्य उपकरण या सहायक या साधन सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण — → चित्र, पोस्टर, श्यामपट, स्लाईड, पाट, नक्शा, होर्डिंग, बैनर, फ्लैशकार्ड, ग्राफ आदि।

3.) श्रव्य उपकरण या साधन → ऐसे उपकरण जिनसे सुनने, सुनाने के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। श्रव्य साधन या सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे → ग्रामोफोन, रेडियो, टेप-रिकॉर्ड आदि।

4.) श्रव्य-दृश्य उपकरण या साधनो → ऐसे उपकरणों या साधनों को जिनसे सुनने, सुनाने तथा देखने, दिखाने के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। श्रव्य-दृश्य, ओडियो, विडियो, साधन या सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे - चल-चित्र, दूरदर्शन, विडियो, ड्रामा, अभिनय।

यह वह माध्यम है की सभी प्रकार के उपकरण दृश्य उपकरण है पर सभी दृश्य उपकरण पढे जाने वाले या श्रव्य या श्रव्य-दृश्य उपकरण नहीं हो सकते है।

शिक्षण सहायक उपकरण या साधनों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1) प्रक्षेपण ~~कर~~ करने योग्य — स्लाइडस तथा फिल्म

2) प्रक्षेपण नहीं करने योग्य — स्लाइडस तथा फिल्म को छोड़ कर सभी।

12/12/

*) श्रव्य - दृश्य साधन का प्रयोग का महत्व या लाभ —

→ प्रचार - शिक्षा के प्रसार, प्रचार एवं इसके व्यापक रूप में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रव्य - दृश्य साधनों प्रयोग करना अत्यधिक लाभ - दायक होता है। इनके प्रयोग से होने वाले कुछ प्रमुख्य महत्व निम्नलिखित हैं। —

1) श्रव्य - दृश्य साधन कम समय एवं श्रम में अधिक शिक्षा देते हैं।

2) ये विषय को सुगम एवं बोधगम्य बनादेते हैं।

3) मात्र सुनने की अपेक्षा सुनकर और देखकर जल्दी सीखते हैं।

4) मात्र सुनकर सिखने की अपेक्षा सुनकर और देखकर सिखी हुई बातों का प्रभाव अधिक देर

5) किसी भी विषय को मात्र सुनकर सिखाने की तुलना में उस विषय से संबंधी विभिन्न सामग्रीयों को श्रव्य-दृश्य उपकरणों की सहायता से प्रदर्शित करते हुए उस विषय को सिखाना अधिक सरल होते।

6) उपयुक्त परिस्थिति में शिक्षार्थी शिक्षक की बातों या उसकी व्याख्या को अधिक तेजी से ग्रहण करते हैं।

7) श्रव्य - दृश्य साधनों के प्रयोग से देखो और विश्वास करो के सिद्धांत पर आधारित शिक्षा प्रणाली से शिक्षा दी जाती है।

Scanned with CamScanner

8) ये शिक्षा सहाय उपकरण शिक्षण, प्रशिक्षण प्रक्रिया को मनोरंजन स्वरूप प्रदान करते हैं

9) ~~श्रव्य-दृश्य सहायक~~ ये शिक्षण सहायक उपकरण अधिक-से-अधिक लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं।

10) श्रव्य-दृश्य शिक्षण सहायक उपकरणों के सहयोग से विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है।

11) इन उपकरणों का प्रयोग शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया को, वास्तविक ~~तत्व~~ तत्व, पूर्ण, संक्षिप्त, क्रमबद्ध तथा अनावश्यक एवं निरर्थक व्याख्याओं से पूर्ण बनाने में सहायक होता है।

AUDIO-VISUAL AIDS

*) ज्ञानेन्द्रिया हमें जगत का ज्ञान प्रदान करती हैं। ~~व्यक्ति~~ मानव शरीर में ~~कुल~~ कुल पांच ज्ञानेन्द्रिया होती है जिसमें नेत्र, हृदय तथा कान, श्रव्य ज्ञानेन्द्रिया हैं जो देखने और सुनने का कार्य करता है। जनता के बिच किसी विचार के संचार के लिए केवल शब्दों का प्रयोग ही प्रयाप्त नहीं है। भारत में अलग-2 भाषी भाषी क्षेत्रों के कारण संचार में कठिनाई होती है। अतः संचार के मूल लक्ष्यों को प्राप्त करने में उसे विषय के संबंध में प्रदर्शन का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन्हीं संचार माध्यमों को दृश्य-श्रव्य साधन करते है।

श्रव्य-दृश्य साधन का विचार अथवा

महान व्यवसाय का सही बिम्ब बनाने में सहायक होते हैं
महान शिक्षाविदो पैस्टोलोजी, रूसो तथा फ्रोयबल ने संचार में दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रयोग की अनुशंसा की है। इसके प्रयोग से शिक्षण को अधिक रुचिकर तथा प्रभावी बनाना संभव होता है। दृश्य-श्रव्य साधनों की सहायता से स्थिर जाने वाले विषय वस्तु शिक्षार्थी के मन-मस्तिष्क में बैठ जाता है।

दृश्य-श्रव्य साधन की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा विविध प्रकार से दी गई है।

*) एडगर डेल के अनुसार → "दृश्य-शिक्षा एक सूचना देने की विधि है जो मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है। इसमें कोई मनुष्य पढ़कर या सुनकर शब्दों के मुकाबले में वस्तु को देखकर, ज्यादा अच्छी तरह से समझ लेता है।"

*) डेकालिर और कोकरन के अनुसार → "श्रव्य-दृश्य साधन वे सामग्री हैं जिनके सही चुनाव और प्रयोग से किसी वस्तु के बारे में सोचने और फिर उसे समझने में सहायता मिलती है।"

*) धामा के शब्दों में → श्रव्य-दृश्य विज्ञापन बोले गए शब्दों को अधिक अच्छी तरह समझने में मदद करती है। क्योंकि ये एक से अधिक इन्द्रियों से समझी जाती है।

(Classification)

*) दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का वर्गीकरण → दृश्य-श्रव्य साधनों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है। पहला श्रव्य साधन इसमें श्रव्य की ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग होता है। दूसरा श्रव्य साधन-- इसमें दृष्टि की ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग होता है। तीसरा दृश्य-श्रव्य साधन जिसमें श्रव्य और दृष्टि दोनो साधन प्रयोग में आते हैं।

28

(Classification of Teaching Aids)

शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण ([redacted])

श्रव्य (Audio)	दृश्य (Visual)	श्रव्य - दृश्य
Type	Flash card	Cinema
Radio	Blackbord	Movie
Recording	Pictures	T.V
Disc		Drama
Wire		Puppet shows
Sound commentaries		commentaries
Public address equipment		

इसके अन्तरगत सुनकर किसी विषय के बारे में जाने जाते है। इसके कुछ प्रमुख साधन अग्रवर्णित है—

A) RADIO (रेडियो) — यह एक विशद सम्पर्क का संचार - साधन है। लोगों की जीवन - शैली को वांछित दिशा में मोड़ने के लिए, यह लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने का अच्छा साधन है। रेडियो एक ऐसा शिक्षण सहायक साधन है, जो सहज ही घर, कमरे, खेत - खलिहान सभी जगह पहुँच सकता है। समूह के बीच में रखकर सुनने से, समूह में आपस में, सुनी बातो पर चर्चा - परिचर्चा भी हो सकती है। इसके प्रयोग से लोगो में जल्दी जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है।

B) रिकॉर्डिंग (Recordings) — रिकॉर्डिंग भी एक अच्छा साधन है। आधुनिक [redacted] रिकॉर्डिंग में काम की चीज रिकॉर्ड किया जाता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे मिटाया भी जा सकता है। यह टेप रिकॉर्ड के माध्यम से किसी भी स्थान पर श्रोताओं के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। टेप पर उन किसानों के विचारों [redacted] को भी रिकॉर्ड

Scanned with CamScanner

करके सुनाया जा सकता है। जो बताई गई बातों से फायदा उठा चुके हैं। इन्हें रेडियो के माध्यम से दूरदूर तक संचारित किया जा सकता है। और दोबार आसानी से सुना जा सकता है।

C) पब्लिक एड्रेस सिस्टम (P.A.E) ⟶ इसे साधारण बोलचाल की भाषा में लाउडस्पीकर कहते हैं। इसके माध्यम से बड़े समूह तक किसी बात का प्रचार किया जा सकता है इसे कन्धे पर लटकाकर प्रसार कार्यकर्ता आसानी से बड़े समूह से बात कर सकता है और उन्हें जरूरी संदेश दे सकता है। इसे बड़े कामों में कई तरीकों से प्रयोग में लाया जाता है सकता है। इसमें माइक्रोफोन, एम्पलीफायर तथा स्पीकर आदि रहते हैं।

II) दृश्य (visual aids) ⟶
प्रसार साधनों का दूसरा भाग है। दृश्य साधन इसके तहत देखकर किसी वस्तु के विषय में जाना पड़ता है।

(A) चॉक बोर्ड ⟶ यह सबसे अधिक प्रचलित दृश्य साधन है इन पर चित्र या चार्ट बनाए जा सकते हैं इन पर सामानों की लिस्ट या प्रक्रियाओं को क्रमवार लिखा जा सकता है। यदि इसका प्रयोग ठीक से किया जाए तो यह कई प्रकार के प्रसार के काम में आ सकता है।

(b) फ्लैश कार्ड (Flash cards) ⟶ ये किसी प्रतिक्रिया के संबंध में बनाया जाता है। इस पर चित्र स्पष्ट लिखा, हुआ अंडा सरल तथा अक्षर बड़े रहने से समझने में आसानी होती है। ये सभी उम्र के लोगों के लिए प्रयोग किये जा सकते हैं। इसका आकार 10×12 इंच के आस-पास रखा जाता है।

(c) मैग्नेटिक बोर्ड (magnetic board) ⟶ इस पर कोई भी चार्ट या पिक्चर आसानी से चिपकाया जा सकता है। इस पर भारी सामग्री भी साट कर दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है।

(d) बुलेटिन बोर्ड (Bulletin board) ⟶ बताई गई बातों से संबंधित चीजों का प्रदर्शन, बुलेटिन बोर्ड पर आसानी से किया जा सकता है। पोस्टर, डायग्राम, चार्ट, ब्रोचर, कार्टून, नक्शा, न्यूज पेपर की कटिंग, नोटिस आदि को कुछ समय तक प्रदर्शित किया जा सकता है। जिसे लोग उसे आते जाते देख सकें।

e) फ्लैनेलग्राफ ⟶ यह एक खादी का कपड़ा लगा बोर्ड होता है जिसके पीछे की तरफ चिपकने वाली चीज लगी रहती है जिससे चार्ट, चित्र या क्लिपिंग, ग्राफ फ्लैनेलग्राफ में आसानी सहा देती है।

(f) पिंग बोर्ड सिस्टम ⟶ यह एक विशेष प्रकार की खिड़िया होती है जिन पर तरह-तरह की सूचनाओं के बोर्ड को प्रदर्शित किया जा सकता है।

g) नक्शे (maps) ⟶ नक्शे के द्वारा बहुत-सी बातें स्पष्ट रूप में दिखायी जासकती है। नक्शे का प्रयोग, आँकड़े दिखाने तथा तथ्यों को बताने में लिया जा सकता है।

h) कार्टून ⟶ नए विचारों को समझने के लिए कार्टून का सफलता पूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। ~~इसकी एक~~ इसकी प्रभावक शक्ति पोस्टर के ही समान होती है किन्तु गंभीरता की कमी के कारण पोस्टर जैसा महत्वपूर्ण नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

i) पोस्टर (Poster) → इसके माध्यम से किसी विचार से दर्शकों को अवगत कराया जाता है। इसमें एक छोटी सी तस्वीर होती है डॉ० सिंह ने कहा पोस्टर की लोगों को प्रेरणा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है डॉ० सिंह का कहना है कि एक अच्छे पोस्टर के बारे में - यदि पोस्टर पर शीर्षक, नारे के रूप में लिखा रहता है तो देखने वाले पर गहरा प्रभाव पड़ता है पोस्टर 28 x 45 इं का होना चाहिए। अक्षर सीधे सादे और जिसे दूर से देखा जा सके।

j) चार्ट → चार्ट का प्रयोग प्रायः किसी वस्तु की तुलनात्मक तक पर देखने के लिए किया जाता है। ये कई ढंग के हो सकते हैं। जैसे - फ्लो, टेबुल, स्ट्रीपटीज, ट्री चार्ट आदि। चार्ट का प्रयोग 30 x 25 के आस-पास का रखना चाहिए।

k) सामाचार पत्र (wall news papers) → यह भी किसी वस्तु या पद्धति को चित्रण के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं। परन्तु इसके साथ रहने वाला लिखित अंश विस्तार से रहता है। इसका आकार कम से कम 12 x 18 होना चाहिए।

l) फोटोग्राफ → फोटो एक वास्तविक तथा प्रामाणिक रिकार्ड माने जाते हैं।

m) स्लाइड (Slides) → स्लाइड्स पारदर्शी चित्र होते हैं। जिन्हें तेज प्रकाश की सहायता से बड़ा करके पर्दे पर दिखाया जाता है। ये कई प्रकार से शीशे या प्लास्टिक पर बनाये जाते हैं।

n) फिल्म स्ट्रीप → यह विराट संचार का एक सस्ता साधन है। इसमें से कई एक अलग-2 चित्र वाले फ्रेम होते हैं। इसमें चित्रों की संख्या 100 भी होती है इन

Scanned with CamScanner

चित्रों में ही सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया जाता है।

0) एपीडिओस्कोप (Epidioscopes) → यह एक प्रोजेक्टिंग यंत्र है। जिसका प्रयोग चित्र, छपी सामग्री, डायग्राम, फोटो, साइक्लोस्टाइल को उनके मौलिक रंगों में प्रोजेक्ट करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

1) बालू अथवा मिट्टी से बनी सामग्री → प्रसार कार्यकर्ता को ग्रामीण क्षेत्रों में काम करना पड़ता है। ग्रामीण लोगों को समझने के लिए गीली मिट्टी को विभिन्न आकार देकर समझाया जा सकता है।

2) मॉडल और स्पेसीमेन → कभी-2 पूरी वस्तु लाकर दिखाना संभव नहीं होता है तब उनका मॉडल बनाकर प्रयोग किया जाता है। ये छोटी वस्तु को बड़ा करके या छोटा करके उसके मौलिक रूप दिखा सकते है।

III) श्रव्य-दृश्य साधन (Audio - Visual Aids) → प्रसार का सबसे अच्छा साधन श्रव्य-दृश्य साधन है। इसके अन्तर्गत नेत्र और कान दोनों ज्ञानेन्द्रियों का इस्तेमाल किया जाता है।

1) चलचित्र (Motion pictures) → चलचित्र प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसका प्रभाव बड़ा ही वास्तविकतापूर्ण होता है। इनके प्रयोग नए-2 भाव उनके मन में उभरते है। चलचित्र के रूप में तैयार करके किसी भी प्रकार की सीख ग्रामीण जनता तक आसानी से पहुँचायी सकती है।

Scanned with CamScanner

2) टेलीविजन या दूरदर्शन → टी० वी० की लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन काफी बढ़ती जा रही है। इस माध्यम से एक ही स्थान पर से बड़े दूर के क्षेत्र में शिक्षण संदेश पहुँचाया जा सकता है।

(C) ड्रामा, कठपुतली तथा अन्य पारम्परिक विधियाँ → यह सब एक ऐसा साधन है जो लोगो का मनोरंजन भी करते है तथा उन्हे कुछ सिखाते भी है। इनका प्रयोग लोगो में प्रिय होता है। अतः जनता का कुछ सीखने-बताने के लिए किया जा सकता है।

d) वीडियो टेप → विडियो टेप में ध्वनि और चित्र दोनो ही रिकॉर्ड हो जाते है। पुनः इन्हे T.V. पर दिखा कर ग्रामीणों को प्रभावित किया जा सकता है। किन्ही विषय पर लोगों के विचार प्रयोग किये गये कृषक या गृहणियों के निजी अनुभव दिखाकर लोगों को ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। उन्हें प्रेरित एवं उत्साहित किया जा सकता है।

*) CONCLUSION (निष्कर्ष) → प्रत्यक्ष अनुभव सम्पूर्ण ज्ञानार्जन का आधार होता है। इससे प्रसार कार्य को सहारा मिलता है। टी० वी०, रेडियो, सिनेमा से व्यवहार में बदलाव लाने का एक अच्छा साधन है क्योंकि इनका प्रस्तुतिकरण मनोरंजन प्रधान होता है।

दृश्य-श्रव्य साधनों के जहां इतनी लाभ होते है वहाँ इनसे कुछ हानियाँ भी हो सकती है। इनके प्रयोग में कुछ त्रुटि होने से सीखने वाले कभी-२ गलत धारणा भी बना लेते है। पर इनसे बचाव संबंधी अध्ययनों में पाया गया है कि प्रसार कार्यकर्ता अपने कार्यो में बहुत कम दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करते है। इसलिए इनका काम पूर्ण सफल नहीं हो पता है।

Scanned with CamScanner